इंडियन स्पेस रिसर्च ऑर्गनाइज़ेशन (इसरो) ने एक महत्वपूर्ण मिशन के तहत श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केन्द्र से मौसम सैटलाइट, इनसैट- 3डीएस का शनिवार को लॉन्च किया। सैटलाइट को 19 मिनट की उड़ान के बाद सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित कर दिया गया। इसरो ने बताया कि, इस सैटलाइट का वजन 420 टन और इसकी लम्बाई 51.7 मीटर है। इनसैट-3डीएस भूस्थैतिक कक्षा में स्थापित किए जाने वाले तीसरी पीढ़ी के मौसम सैटलाइट का मिशन है। इसे मौसम का अवलोकन करने, भविष्यवाणी और आपदा चेतावनी के लिए भूमि और महासागर सतहों की निगरानी करने के लिए डिजाइन किया गया है। इस सैटलाइट से वर्तमान में संचालित इनसैट-3डी और इनसैट-3डीआर उपग्रहों के साथ मौसम संबंधी सेवाओं में वृद्धि होगी। यह सैटलाइट समुद्र की सतह का अध्ययन करके अधिक सटीक, सटीक और सूचनात्मक मौसम पूर्वानुमान प्राप्त करने में मदद करेगा और सूनामी जैसी प्राकृतिक आपदा की चेतावनी देने में सक्षम होगा।

आंध्र में जगनमोहन रेड्डी के खिलाफ ''राजधानी फाइल्स'' फिल्म रिलीज़ कर रहे हैं चन्द्रबाबू

-लक्ष्मण वेंकट कुचि-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 फरवरी। दक्षिण भारत में फिल्म व राजनीति दोनों एक दूसरे में समाहित है क्योंकि फिल्मी अभिनेतागण व राजनीतिज्ञ, कभी रील में तो कभी रियल में अलग-अलग भूमिकाएं निभाते हैं। अत: इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि, कोई फिल्म चुनाव का प्रचार करने व चुनाव तैयारी का जरिया बन जाए, और जैसा कि वे ऐसा लम्बे समय से करते आ रहे हैं।

तमिलनाडू में फिल्मी दुनिया से जुड़े एम.जी. रामचन्द्रन और उनकी शिष्या जे. जयललिता, उनके विरोधी एम. करुणानिधि में सब मुख्य मंत्री बने थे। सुपरस्टार एन.टी. रामाराव की तो कहानी अद्भुत है। अपनी पार्टी का गठन करके मात्र नो महीने में एक कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय पार्टी को सत्ता से बेदखल कर दिया था। जो इस बात का संकेतक है कि फिल्म व फिल्मी सितारे दक्षिण भारत की राजनीति को किस सीमा तक प्रभावित करते हैं।

इसलिए, इस बात से बमुश्किल ही अचम्भा होता है कि, फिल्मों को अधिकतर प्रचार के पहिए के रुप में राजनीतिज्ञों एवं राजनीतिक दलों द्वारा प्रयोग किया गया है।

लगभग जो भी फिल्में एम.जी.आर. ने बनाई और जिस भी फिल्म में उन्होंने जो किरदार निभाए वो उन्होंने बहुत ही सोच समझ चुने थे। ताकि उनकी छवि विशेष रुप से एक अच्छा कार्य करने वाले की बने और वे जनता के मसीहा जैसे बन जाए। एन.टी.आर. वास्तविक जीवन में जो करते थे वो फिल्मी किरदारों से प्रभावित होता था।

आंधप्रदेश में इतिहास की पुनरावृति हो रही है, जहां पर तेलुगुदेशम पार्टी के एन. चन्द्रबाबू नायडू ''राजधानी फाइल्स'' फिल्म का प्रचार कर रहे है। फिल्म में बताया गया है कि मुख्यमंत्री वाई.एस. जगनमोहन रेड्डी द्वारा किस प्रकार अमरावती को राजधानी शहर बनाने के विचार को कैसे नष्ट कर दिया गया।

उसका लेखा जोखा इस फिल्म में है और उन्होंने ही अमरावती राजधानी नहीं बनने दिया। जबकि नई राजधानी के निर्माण के लिए किसानों ने अपनी जमीने तक दे दी थी। फिल्म राजधानी फाइल्स का निर्देशन भवानी शंकर ने किया है जो कि पूरी 2.30 घंटे की लम्बी फिल्म है।

इस फिल्म में टी.डी.पी. के तथ्यों, कल्पनाओं और आरोपों को सृजनात्मक रुप से इस तरह मिश्रित किया गया ताकि जनता के दिल दिमाग पर इसका असर पड़े। यही कारण है जिसकी वजह से सत्तारुढ़ वाई.एस.आर.सी.पी. इस फिल्म के प्रसारण को रुकवाने के लिए कोर्ट में गई थी।

नायडू, जो इस समय भाजपा के साथ गठबंधन करने की कोशिश कर रहे हैं उनकी तरफ अभिनेता से नेता बने पवन कल्याण गठबंधन करने के उनके पक्ष में है वो इस नई फिल्म को प्रोत्साहित कर रहे हैं और इस फिल्म को प्रचार अभियान के वाहन के रुप में बनाया गया है मुख्यमंत्री के खिलाफ और उन्होंने लोगों से अनुरोध किया है कि वे जगन के गलत कार्यों को जानने समझने के लिए इस फिल्म को अवश्य देखें जो कि प्रदेश की राजधानी के विरुद्ध तथा प्रदेश के हितों के खिलाफ किए हैं।

नायडू ने मुख्यमंत्री के खिलाफ पारी समाप्ति का आगाज़ करते हुए फिल्म को लांच किया और कहा ''जगन रेड्डी आपकी फिल्म अब खत्म हो गई है। असली फिल्म अब शुरु हो रहीहै,'' उन्होंने राजधानी अमरावती का उदाहरण दिया उनके तीन राजधानी बनाने के विचार को कोर्ट ने रद्द कर दिया और अमरावती के विचार को नष्ट करने के लिए सब कुछ करने की उनकी हरकतें बताई हैं।

मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठे व्यक्ति ने इस विचार के खिलाफ अपनी व्यक्तगत दुर्भावना के कारण अमरावती का सत्यानाश कर दिया, नायडू ने ऐसा आरोप लगाया और जनता से अनुरोध किया कि उन्हें उनके इन कार्यों के कारण दंडित किया जाना चाहिए, उन्होंने पुलिस बल का दुरुपयोग किया और अमरावती के समर्थकों को डराने धमकाने का अपराध किया और उन्हें यातनाएं दी गई।

फिल्म ''राजधानी फाइल्स'' के बारे में नायडु ने कहा कि इस फिल्म में अमरावती के समर्थकों का दमन करने के लिए जिस निर्दयता का प्रयोग मुख्यमंत्री ने किया उसका पूरा चिट्ठा इसमें है और यही कारण है जिसकी वजह से जगमोहन रेड्डी ने राज्य में इस फिल्म के प्रदर्शन पर रोक लगाने के लिए पूरी कोशिश की है।

परंतु आंध्र प्रदेश हाईकोर्ट के द्वारा हस्तक्षेप करने के बाद प्रदेश में फिल्म को प्रदर्शित करने की इजाजत मिली है, चुनाव सामने हैं और फिल्म के प्रति विशेष प्रेम रखने वाले प्रदेश में प्राय: राजनीतिक प्रचार -प्रसार के वाहन के रुप में फिल्में कारगर साबित हुई हैं।

कांग्रेस नेता और फिल्म निर्माता निदेशक, दसारी नारायण राव (तेलुगू फिल्मों के कादर खान) द्वारा वर्ष 1999 में बनाई गई एक पोलिटिकल कैम्पेन फिल्म ''पिचोडी चेटीलो राया'' में स्वयं चंद्रबाबू नायडू पर हमला क्यों बोला गया और उनकी निंदा क्यों की गई। ये वो चुनाव थे जिनमें टी.डी.पी. सत्ता से बाहर हुई थी। यह फिल्म सितम्बर में उस समय रिलीज़ हुई जब चुनाव प्रचार चरम पर था और इसके द्वारा कांग्रेस को तत्कालीन मुख्यमंत्री नायडू के विरुद्ध अपना संदेश फैलाने और नायडू को जनता विरोधी व घोटालाबाज दर्शाने में मदद मिलीं।

पड़ोसी राज्य तमिनलाडू में, भाजपा भी फिल्मी रचनात्मकता का सहारा ले रही है। भाजपा ने ''डी.एम.के. के फाइल्स'' रिलीज़ की। ऑडियो और वीडियो, फाइल्स के द्वारा इसमें डी.एम.के. के कथित भ्रष्टाचार का लेखा -जोखा और भी दस्तावेज रिलीज़ करने का वादा किया गया था।

- चन्द्र बाबू के अनुसार फिल्म में बताया गया है कि, किस प्रकार मुख्यमंत्री जगनमोहन की कारगुजारियों की वजह से अमरावती को राजधानी नहीं बनाया जा सका, जबकि कई किसानों ने इसके लिए अपनी जमीनें दी थीं।
- चन्द्र बाबू नायडू इस फिल्म का जोरदार प्रचार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि, इसमें मुख्यमंत्री के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया गया है, इसीलिए जगनमोहन रेड्डी इसे रोकने का प्रयास कर रहे थे।
- ज्ञातव्य है कि, यह फिल्म हाईकोर्ट के हस्तक्षेप के बाद रिलीज़ होने जा रही है।

जगद्गुरु रामभद्राचार्य और प्रसिद्ध गीतकार गुलज़ार को ज्ञानपीठ पुरस्कार

रामभद्राचार्य ने 240 से अधिक पुस्तकों और ग्रंथों की रचना की है तथा प्रसिद्ध गीतकार गुलज़ार को हिन्दी एवं उर्दू के गीतों की नई विधा, ''त्रिवेणी'' के आविष्कार के लिए यह पुरस्कार देने का निर्णय लिया गया है

नई दिल्ली, 17 फरवरी (वार्ता)। संस्कृत के प्रकांड विद्वान रामभद्राचार्य और उर्दू के साहित्यकार गुलजार को अट्ठावनवें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया जायेगा।

ज्ञानपीठ पुरस्कारों के निर्णायक मंडल ने शनिवार को वर्ष 2023 के लिये अट्ठावनवें ज्ञानपीठ पुरस्कारों की घोषणा की।

ज्ञानपीठ पुरस्कार समिति की तरफ से शनिवार को जारी विज्ञप्ति में कहा गया, अट्ठावनवां ज्ञानपीठ पुरस्कार दो भाषाओं के लब्धप्रतिष्ठ लेखकों, जगद्गुरु रामभद्राचार्य (संस्कृत साहित्य) और गुलजार (उर्दू साहित्यकार) देने का निर्णय किया गया है।

सुप्रसिद्ध कथाकार और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रतिभा राय की अध्यक्षता में हुई चयन समिति की बैठक में यह निर्णय लिया गया। इस बैठक में चयन समिति के अन्य सदस्य सर्व माधव कौशिक, दामोदर मौजो, प्रो. सुरंजन दास, प्रो. पुरुषोत्तम बिल्माले, प्रफुल्ल शिलेदार, प्रो हरीश त्रिवेदी, प्रभा वर्मा, डॉ जानकी प्रसाद शर्मा, ए कृष्णा राव और ज्ञानपीठ के निदेशक मधुसुदन आनन्द शामिल थे।

- उल्लेखनीय है कि, संस्कृत भाषा को दूसरी बार और उर्दू के लिये पांचवीं बार यह पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है। देश के सर्वोच्च साहित्य सम्मान, ज्ञानपीठ पुरस्कार के रूप में विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रुपये 11 लाख की राशि, वाग्देवी की प्रतिमा और प्रशस्ति भेंट की जायेगी।

उत्तर प्रदेश के चित्रकूट के निवासी रामभद्राचार्य प्रख्यात विद्वान्, शिक्षाविद्, बहुभाषाविद्, रचनाकार, प्रवचनकार, दार्शनिक और हिन्दू धर्मगुरु हैं।

वे चित्रकूट स्थित संत तुलसीदास के नाम पर स्थापित तुलसी पीठ नामक धार्मिक और सामाजिक सेवा संस्थान के संस्थापक और अध्यक्ष हैं। वे बहुभाषाविद् हैं और 22 भाषायें बोलते हैं। वह संस्कृत, हिन्दी, अवधी, मैथिली सहित कई भाषाओं में आशुकवि और रचनाकार हैं। उन्होंने 240 से अधिक पुस्तकों और ग्रंथों की रचना की है। उनके द्वारा लिखे गये चार महाकाव्य में दो संस्कृत भाषा और दो हिंदी भाषा में लिखे गये हैं। इससे पहले, उन्हें 2015 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया जा चुका है।

गुलज़ार नाम से प्रसिद्ध सम्पूर्ण सिंह कालरा (1934) हिन्दी फिल्मों के एक प्रसिद्ध गीतकार हैं। इसके अलावा, वे एक कवि, पटकथा लेखक, फ़िल्म निर्देशक नाटककार तथा प्रसिद्ध शायर हैं। उनकी रचनायें मुख्यत: हिन्दी, उर्दू तथा पंजाबी में हैं।

इससे पहले, गुलज़ार को वर्ष 2002 में सहित्य अकादमी पुरस्कार और वर्ष 2004 में पद्म भूषण से सम्मानित किया जा चुका है। अपनी लम्बी फ़िल्मी यात्रा के साथ साथ गुलज़ार अदब के मैदान में नई नई मंज़िलें तय करते रहे हैं। नज़्म में इन्होंने एक नई विधा 'त्रिवेणी' का आविष्कार किया है जो तीन पंक्तियों की ग़ैर मुक़फ़्फ़ा नज़्म होती है।

उल्लेखनीय है कि, संस्कृत भाषा को दूसरी बार और उर्दू के लिये पांचवीं बार यह पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है। देश के सर्वोच्च साहित्य सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार के रूप में विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप रुपये 11 लाख की राशि, वाग्देवी की प्रतिमा और प्रशस्ति पत्र दिये जाते है।

ताजेवाला हैड से चूरू ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आभार प्रकट किया।

शेखावत ने कहा कि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में बनी यह सहमति ऐतिहासिक है। दो दशक से अटके मुद्दे पर ठोस और स्थायी समाधान की दिशा में यह एक मजबूत कदम है और निश्चित ही राजस्थान में जल उपलब्धता के विषय में मील का पत्थर साबित होगा। अपर यमुना बेसिन में तीन जल भंडारण, रेणुकली, लखवार और किशाऊ चिह्नित किए गए हैं, जहां से राजस्थान को हथिनीकुंड से निर्धारित अवधि के लिए जल उपलब्ध कराया जाएगा। यदि संभव हुआ तो शेष समयावधि में भी पेयजल और सिंचाई की जरूरतों को पूरा किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि, यमुना जल पर मई 1994 में संपादित समझौते के अनुसरण में राजस्थान को हरियाणा स्थित ताजेवाला हैड पर मानसून के दौरान 1917 क्यूसेक जल आवंटित है। वर्तमान में ताजेवाला हैड से राजस्थान को जल लाने के लिये कैरियर सिस्टम उपलब्ध नहीं है। राज्य द्वारा वर्ष 2003 में हरियाणा की नहरों को रीमॉडल करके राजस्थान में उक्त जल लाने के लिये व पुन: वर्ष 2017 में भूमिगत प्रवाह प्रणाली के माध्यम से जल लाने हेतु हरियाणा सरकार को एम.ओ.यू. भेजा गया जिस पर हरियाणा राज्य की सहमति प्राप्त नहीं हो सकी थी। पिछले 30 वर्षों के दौरान राजस्थान द्वारा लगातार इस मुद्दे को अपर यमुना रिव्यू कमेटी व अन्य अंतर्राज्यीय बैठकों में निरंतर रखा गया।

अब मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री शेखावत के सम्मिलित प्रयासों से शनिवार को इसके लिये एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर हुए हैं। केन्द्रीय जलशक्ति मंत्रालय की सचिव देबाश्री मुखर्जी, राजस्थान के अतिरिक्त मुख्य सचिव जल संसाधन अभय कुमार तथा कमिश्नर एवं शासन सचिव जल संसाधन हरियाणा पंकज अग्रवाल द्वारा एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किए गए।

वीडियो कॉन्फ्रैंसिंग के जरिए दिल्ली कोर्ट में उपस्थित हुए केजरीवाल

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 17 फरवरी। ई.डी. (एनर्फोसमेंट डायरेक्टरेट) के सम्मन का पालन न करने पर, दिल्ली के मुख्यमंत्री, अरविंद केजरीवाल शनिवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए राउज एवेन्यू कोर्ट में पेश हुए और कहा कि, दिल्ली विधानसभा का बजट सत्र चल रहा है, इस कारण वह व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने में असमर्थ हैं।

आबकारी नीति (जो अब रद्द कर दी गई है) से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग मामले में सम्मन का पालन न करने पर ई.डी. ने उनके विरुद्ध शिकायत दर्ज की थी, जिसके कारण उनको व्यक्तिगत रूप से अदालत में पेश होना था।

उनके वरिष्ठ अधिवक्ता, रमेश गुप्ता ने अदालत को बताया कि, दिल्ली के मुख्यमंत्री अगली तारीख पर व्यक्तिगत रूप से पेश होंगे। कोर्ट ने मामले की सुनवाई 16 मार्च तक के लिए स्थगित कर दी। ई.डी. ने अपनी शिकायत में कहाकि, केजरीवाल जानबूझकर, सम्मन का पालन नहीं कर रहे हैं तथा असंतोषजनक बहाने बनाते जा रहे हैं। ई.डी. ने कहा कि अगर उनके जैसे उच्च पदस्थ सार्वजनिक अधिकारी ने कानून की अवज्ञा की तो यह ''आम आदमी'' (कॉमन मैन) के लिए गलत उदाहरण प्रस्तुत करेगा।

न्यायाधीश ने पहले कहा था कि, शिकायत की विषय वस्तु और रिकॉर्ड पर दी गई जानकारी से आरोपी अरविंद केजरीवाल के विरुद्ध भारतीय दंड संहिता (आई.पी.सी.) की धारा 174 के तहत प्रथम दृष्टया अपराध बनता है और उनके विरुद्ध कार्यवाही आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त है।

- ई.डी. सम्मनों की अवज्ञा के मामले में दायर केस की सुनवाई में केजरीवाल उपस्थित हुए। उन्होंने विधानसभा सत्र के कारण व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने से इन्कार कर दिया था।

आप संयोजक ने पहले ई.डी. को पत्र लिखकर उन्हें जारी किए गए सम्मन को अवैध और राजनीतिक रूप से प्रेरित बताया था। उन्होंने आरोप लगाया था, कि सम्मन का उद्देश्य उन्हें चुनाव प्रचार करने से रोकना था।

राहुल गांधी ने काशी विश्वनाथ के दर्शन किये, वायनाड से सीधे मंदिर पहुँचे

राहुल गांधी रविवार की दोपहर प्रयागराज से अपनी भारत जोड़ो न्याय यात्रा फिर शुरू करेंगे

नई दिल्ली, 17 फरवरी। हाथी के हमले में एक व्यक्ति की मौत की खबर के बाद कांग्रेस नेता राहुल गांधी न्याय यात्रा से ब्रेक लेकर अपने संसदीय क्षेत्र वायनाड रवाना हो गए हैं। कांग्रेस की ओर से बताया गया है कि राहुल गांधी रविवार की दोपहर उत्तर प्रदेश के प्रयागराज से अपनी भारत जोड़ो न्याय यात्रा फिर शुरू करेंगे। गांधी का वायनाड़ दौरा ऐसे समय में हो रहा है जब एक दिन पहले शुक्रवार सुबह एक जंगली हाथी के हमले में गंभीर रूप से घायल हुए एक व्यक्ति की कोझिकोड मेडिकल कॉलेज में मौत हो गई थी। वन विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि पीड़ित वन विभाग का एक इको-टूरिज्म गाइड था और यहां कुरुवा द्वीप पर तैनात था, जो एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने ट्वीट किया, ''वायनाड में राहुल गांधी की मौजूदगी की तत्काल जरूरत है। वे आज शाम 5 बजे वाराणसी से रवाना हुए। भारत जोड़ो न्याय यात्रा कल 18 फरवरी को प्रयागराज में दोपहर 3 बजे फिर से शुरू होगी।''

वायनाड में सत्तारूढ एलडीएफ, विपक्षी यूडीएफ और भाजपा ने क्षेत्र में आम लोगों पर पशुओं के हमले की समस्या का स्थायी समाधान निकालने की मांग करते हुए जिलाव्यापी हड़ताल का आह्वान किया। जिले में दुकानें और व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रहे जबकि सड़कों से वाहन नदारद रहे।

कांग्रेस की यात्रा शुक्रवार को उत्तर प्रदेश में प्रवेश कर गई और राजस्थान में प्रवेश करने से पहले राज्य से होकर गुजरेगी। कांग्रेस की पूर्व से पश्चिम (मणिपुर-मुंबई) यात्रा 15 राज्यों से होकर गुजरने वाली है। इस दौरान यह 6,700 किलोमीटर की दूरी तय करेगी और इसका उद्देश्य रास्ते में आम लोगों से मिलते हुए न्याय का संदेश देना है।

इससे पहले राहुल गांधी ने शनिवार सुबह काशी पहुंचकर बाबा विश्वनाथ के दर्शन किए। कांग्रेस ने अपने एक्स हैंडल पर इस बात की जानकारी दी है लेकिन ये आरोप भी लगाए हैं कि आखिरी मौके पर हमारे कैमरे को मिली अनुमति को निरस्त कर दिया गया। कांग्रेस ने एक्स पर पोस्ट कर बताया, आज सवेरे करीब 10.30 बजे राहुल गांधी ने काशी में बाबा विश्वनाथ मंदिर में दर्शन और अभिषेक किया। आखिरी क्षण में मंदिर में जाने के लिए हमारे कैमरे को मिली अनुमति निरस्त कर दी गई। जिला प्रशासन ने आश्वस्त किया कि, मंदिर के कैमरापर्सन द्वारा फोटो साझा की जाएगी। साढ़े तीन घंटे तक लगातार प्रयास करने पर भी फोटो उपलब्ध नहीं कराई गई। कांग्रेस ने कहा, फिर कुछ 7 तस्वीरें भेजी गईं, जिनमें से एक भी दर्शन करने की नहीं हैं। जबकि मंदिर के कैमरापर्सन ने फोटो खींची थीं। ऐसा करके वाराणसी के जिला प्रशासन ने एक बार फिर यह साबित कर दिया कि वह दिल्ली में बैठे कैमराजीवी के मुलाजिम से ज़्यादा और कुछ नहीं।

'2256 मामलों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में से छोटी-मोटी त्रुटियां दूर करना और सही तरह से नोटिस जारी करना, हाईकोर्ट रूल्स के अंतर्गत हाईकोर्ट की रजिस्ट्री का दायित्व है। बार के सदस्यों ने दिल्ली हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट में चल रही प्रथा के बारे में भी अवगत कराया, जहां रजिस्ट्रार ही नोटिस की सर्विस के लिए प्राथमिक तौर पर जिम्मेदार हैं और केवल अत्यंत विवादित मामलों में ही अदालत नोटिस जारी करने के आदेश स्वयं पारित करने का दायित्व लेती है। बार के सदस्यों ने कहा कि यह प्रथा राजस्थान हाईकोर्ट में भी लागू की जा सकती है। बार के सदस्यों द्वारा दिए गए सुझाव पर महाअधिवक्ता राजेंद्र प्रसाद ने पूर्णत: सहमति जताई।

मामले की सुनवाई के दौरान अदालत के समक्ष यह तथ्य भी पेश किया गया कि पिछले दो हफ्तों में 8666 सूचीबद्ध मामलों में से 2256 मामले ''ऑडर्स '' श्रेणी (जिनमें मामूली तकनीकी त्रुटिया या नोटिस नही जारा हुए थे) में सूचीबद्ध थे, यानि अदालत की 'कॉज लिस्ट' मे से 25 प्रतिशत मामले ''ऑडर्स'' श्रेणी के थे। मामले की गंभीरता को देखते हुए अदालत ने महाअधिवक्ता राजेंद्र प्रसाद, के नेतृत्व में समिति गठित की है, जिसमें वरिष्ठ अधिवक्ता ए.के. शर्मा, बार अध्यक्ष व अधिवक्ता प्रहलाद शर्मा, अधिवक्ता अनिता अग्रवाल और अधिवक्ता सुनील समदड़िया सदस्य हैं।

- इस मामले को गंभीरता से लेते हुए और इन मामलों के सही निस्तारण के लिए अदालत ने महाअधिवक्ता की अध्यक्षता में गठित समिति को छः हफ्तों में सुझाव प्रस्तुत करने को कहा है।

कांग्रेस के कमलनाथ भाजपा में शामिल ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भाजपा के कई वरिष्ठ नेता पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ के सम्पर्क में है।

नाथ और उनके परिजनों के कई व्यवसाय हैं और उनकी स्थिति काफी नाजुक है, उन्हें बहुत आसानी से केन्द्रीय संस्थाओं के जरिए निशाना बनाया जा सकता है। और इससे इंकार नहीं किया जा सकता है कि उन्होंने शायद इसीलिए भाजपा में जाने का निर्णय किया है। विपक्ष के कई नेता केन्द्रीय एजेंसियों के डर से ही भाजपा में शामिल हो रहे है। पत्रकारों से वार्ता में उन्होंने कहा कि ज्यादा उत्साहित ना हों।

जब एक पत्रकार ने पूछा कि वे इस संभावित दल परिवर्तन का खंडन नहीं कर रहे है, तो कमलनाथ ने कहा, ''यह खंडन की बात नहीं है, आप यह कह रहे हैं, आप लोग उत्तेजित हैं। मैं उत्तेजित नहीं हो रहा हूं, इस तरफ या उस तरफ, पर यदि ऐसी कोई बात होती है, मैं पहले आपको सूचना करूंगा।''

पिछले कुछ दिन से, कमलनाथ अपने प्रभाव क्षेत्र छिंदवाड़ा के दौरे पर थे, जहां से नौ बार सांसद रहे हैं। उनके पुत्र नकुल नाथ ने यह सीट 2019 के लोकसभा चुनाव में जीती थी, वो भी तब जब भाजपा ने राज्य की सभी 28 सीटों पर विजय प्राप्त की थी।

कमलनाथ के भाजपा में जाने की चर्चा के बारे में पूछने पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने दिन में जबलपुर में कहा था, मैंने कल रात 10.30 पर कमलनाथ से बात की थी, वे छिंदवाड़ा में हैं।''

सिंह ने कहा, ''ज़ब इंदिरा गांधी को जनता पार्टी ने जेल भेजा था, उस समय कमलनाथ ने अपनी राजनीतिक यात्रा शुरू की, वे नेहरू-गांधी परिवार के साथ खड़े रहे, क्या आप सोचते हैं कि ऐसा व्यक्ति कभी भी कांग्रेस तथा गांधी परिवार को छोड़ सकता है?''

कहते हैं कि कमलनाथ राज्यसभा का टिकिट नहीं मिलने से नाराज हैं तथा साथ ही राहुल गांधी उनके खिलाफ हैं, जब से कांग्रेस पार्टी ने गत वर्ष के अन्त में मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव बुरी तरह से हारा है।

- कमलनाथ के गत कुछ समय से कांग्रेस छोड़ कर भाजपा में जाने की चर्चा चल रही थी। बताया जाता है कि कमलनाथ और उनका परिवार कई तरह के व्यवसाय करता है, इसलिये उन्हें आसानी से ई.डी. व अन्य एजेन्सियों द्वारा टारगैट किया जा सकता है, और हो सकता है ऐसा किया भी जा रहा हो।

विधानसभा चुनाव में सफाया होने के बद, जब भाजपा के विधानसभा की 230 सीटों में से 163 जीती थी और कांग्रेस मात्र 66 सीटों जीत पाई थी, तब कमलनाथ को मध्यप्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के पद से हटा दिया गया था।

कमलनाथ की अन्तत: होने वाली राजनीतिक यात्रा की चर्चाओं के बावजूद के अलावा भी, भाजपा काफी लंबे समय से राजनीतिक परिवारों को विभाजित करते रहे हैं और इसके लिये वे भाईयों तथा बहनों तथा अन्य रिश्तेदारों में मतभेदों का फायदा उठाते रहे है। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा पार्टी अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी के समय में गैर आर.एस.एस. पृष्ठभूमि के अनेक विराधी दल नेताओं को भाजपा में शामिल किया गया था, ताकि पार्टी के परम्परागत हिन्दू समर्थकों के आधार को व्यापक बनाया जा सके।

एक उत्कृष्ट मामला पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के परिवार का है, जिनके दूसरे बेटे, सुनील शास्त्री को भाजपा में लाया गया और फिर उनको महासचिव बनाया गया ताकि, कांग्रेस अनुयायी और कार्यकर्ता, भाजपा को स्वीकार कर लें। यद्यपि, सुनील शास्त्री ने बाद में भाजपा छोड़ दी और पुन: कांग्रेस में शामिल हो गए थे। लेकिन जब गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वाराणसी (जो परंपरागत रूप से शास्त्री परिवार का घरेलू मैदान रहा है।) से लोकसभा चुनाव लड़ने का निर्णय लिया तो, वह फिर से भाजपा में चल गए। पर मोदी युग में, शास्त्री को बदले में कुछ नहीं मिला।

वाजयेपी-अडवाणी युग में, सुस्थापित कांग्रेस परिवार में विभाजन के बीज बोते हुए, कई कांग्रेस नेताओं को भाजपा में शामिल कर लिया था। कांग्रेस छोड़ने वाले नेताओं ने दावा किया था कि, नेहरू-गांधी परिवार द्वारा नियंत्रित कांग्रेस, उन्हें उनका हक नहीं दे रही थी, इससे साबित हुआ कि, तथा वैचारिक मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता, मात्र एक दिखावा था, असल कारण सत्ता की लालसा था। फिर भी कुछ नैतिकताएं थी, यद्यपि वास्तव में वह, यह दिखाने का जरिया था कि भाजपा अन्य पार्टियों से अलग है, ''अलग तरह की पार्टी'' है।

भाजपा पर, मोदी-शाह की जोड़ी का नियंत्रण आने के बाद से स्थिति में आमूल-चूल बदलाव आ गया है। यहां नेताओं पर हर संभव तरीके से दबाव डाला जा रहा है, धमकाया जा रहा है एवं लुभाया जा रहा है। मोदी-शाह चुनावी प्रबंधन टीम, सरकारी एजेंसियों की मदद से, लक्षित नेता तथा उनके परिवार के विवादों संबंधित सभी जानकारी एकत्र करती है ताकि, उन्हें उनकी पार्टियों से दूर किया जा सके।

इसका एक उदाहरण, पवार परिवार का है, जहां भतीजे अजीत पवार का इस्तेमाल, वरिष्ठ शरद पवार को नष्ट और बर्बाद करने के लिए किया गया है। अजीत पवार को उपमुख्यमंत्री बनाया गया है और उन्हें चुनाव आयोग (जिसकी स्वतंत्रता से हाल के वर्षों में समझौता किया गया है) की मदद से नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी (एन.सी.पी.) का नाम दे दिया गया है।

यह सत्य है कि, अधिकांश भारतीय परिवारों में भाई-बहन, पैसे और सत्ता के लिए लड़ती है, लेकिन इस बात का श्रेय, युगल नेतृत्व वाली भाजपा को जाना चाहिए कि, वह स्वयं को सत्ता में बनाये रखने के लिए, इन विवादों और मतभेदों का ''रचनात्मक'' उपयोग करती है।

राहुल की यात्रा ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अम्बानी के, और उनके बड़े समाचार पत्र, अखबार निकलते हैं। ये टीवी चैनल्स किसानों, श्रमिकों, एवं गरीबों के बारे में कुछ नहीं दिखाएंगे क्योंकि इनके मालिक इन्हें कहते हैं कि ऐश्वर्या का नृत्य दिखाएं। प्रधानमंत्री को टीवी पर 24 घंटे दिखाएं और अमिताभ बच्चन को दिखाएं। परंतु देश से संबंधित मुद्दों पर ये चैनल बात नहीं करते हैं।

छोटे व्यापारियों ने उन्हें बताया कि, उन्हें इस बात का डर है कल क्या होगा। राहुल ने कहा कि उन्हें उनकी यात्रा के दौरान नफरत का माहौल नहीं देखा। यहां तक कि जो लोग भाजपा व आर.एस.एस. के थे उन्होंने भी प्रेम से बात की। उन्होंने कहा कि यह देश प्यार मोहब्बत का देश है और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जो कोई भी उनकी यात्रा में शामिल हो रहे है वे सब यह महसूस कर रहे हैं कि वे अपने घर आ रहे हैं और वे मोहब्बत फैला रहे है।

उन्होंने यहां व्यापक बेरोजगारी का उल्लेख किया और कहा कि युवाओं को उच्च शिक्षित होने के बावजूद रोजगार नहीं मिल रहा है।

वरुण गांधी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्होंने किसानों की मांगों पर ध्यान ना देने को लेकर सरकार की भर्त्सना की। उन्होंने कहा कि केन्द्र की राक्षसी ताकत के आगे गरीब अपनी आवाज नहीं उठा पा रहे हैं। ऐसी अटकलें हैं कि आने वाले दिनों में वरुण कांग्रेस में शामिल हो सकते हैं क्योंकि भाजपा शायद अगले लोकसभा चुनावों में उन्हें तथा सुल्तानपुर से सांसद उनकी मां मेनका गांधी (67) को पार्टी टिकट नहीं देगी।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंभाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908